जिनागम बाह्य स्वतंत्र चिंतन की मान्यता वाले जैनाभासी संघ

• श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जिनागम वर्णित पंथ से, मार्ग से अर्थात् जिनागम पंथ से बाह्य स्वनिर्णीत स्वतंत्र चिंतन की मान्यता करनेवाले एवं श्रमण-श्रावक से करवाने वाले कई जैनाभासी संघ हुए हैं एवं वर्तमान में भी हो रहे हैं। जो वर्तमान में हो रहे हैं उनकी तेरहपंथ - बीसपंथ आदि पंथ परम्परायें संज्ञाएँ प्रचलित हो रही हैं। अहो! श्रमण और श्रावक भी इन पंथ परम्पराओं के पोषक होने से जिनागम पंथ बाह्य हो रहे हैं।

इन्द्रनन्दि आचार्य ने नीतिसार समुच्चय में कहा है-

गोपुच्छकः श्वेतवासा द्राविडो यापनीयकः।
निष्पिछश्चेति पंचैते जैनभासाः प्रकीर्त्तिताः।।10।।

अर्थात् गोपुच्छक, श्वेताम्बर, द्राविड, यापनीय और निष्पिच्छ ये जैनाभास कहे गये हैं।

स्व स्वमत्यनुसारेण सिद्धांत व्यभिचारिणम्।
विरचय्य जिनन्द्रस्य मार्गं निर्भेदयन्ति ते।।11।।

अर्थात् ये संघ अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार विरुद्ध सिद्धान्तों की रचना कर जिनेन्द्र देव के मार्ग को उनके समान ही बताते हैं।

1. **श्वेताम्बर संघ –** आचार्य देवसेन ने दर्शनसार में कहा है-

छत्तीसे वरिससए विक्क मरायस्स मरणपत्तस्स।
सोरट्ठे बलहीए उप्पण्णो सेवडो संघो।।11।।
सिरिभद्दबाहु गणिणो सीसो णामेण संति आइरिओ।
तस्स स सीसो दुट्ठो जिणचंदो मंदचारित्तो।।12।।
तेण कियं मयमेयं इत्थीणं अत्थि तव्भवे मोक्खो।
केवलणाणीण पुणो अद्दक्खाणं तहा रोओ।।13।।
अंवर सहिओ वि जई तिज्झइ।।14।।

अर्थात् विक्रमादित्य की मृत्यु के 136 वर्ष बाद सौराष्ट्र देश के बल्लभीपुर में, श्वेताम्बर संघ उत्पन्न हुआ। श्री भद्रबाहु गणि के शिष्य शान्ति नाम के आचार्य थे, उनका 'जिनचन्द्र' नामका एक शिथिलाचारी, दुष्ट शिष्य था। उसने यह मत चलाया कि स्त्रियों को उसी भव में मोक्ष प्राप्त हो सकता है, और केवलज्ञानी भोजन करते हैं, तथा उन्हें रोग भी होता है। वस्त्र धारण करने वाला भी मुनि मोक्ष प्राप्त करता है। ऐसी आगम विरुद्ध मान्यता चलाई।

2. **द्राविड संघ –** आचार्य देवसेन ने दर्शनसार में कहा है-

पंचसए छब्बीसे विक्कमरायस्स मरणपत्तस्स।
दक्खिण महुराजादो दाविड संघो महामोहो।।28।।

अर्थात् विक्रम राजा की मृत्यु के 526 वर्ष बीतने पर दक्षिण मथुरा नगर में यह महा मोहरूप द्राविड संघ उत्पन्न हुआ।

सिरिपुज्जपादसीसो दाविड संघस्स कारगो दुट्ठो।
णामेण वज्जणंदी पाहुडवेदी महासत्तो।।24।।
अप्पासुयचणयाणं भक्खणदो वज्जिदो मुणिंदेहिं।
परिरइयं विवरीयं विसेसियं वग्गणं चोज्जं।।25।।
बीएसु णत्थि जीवो उब्भसणं णत्थि फासुगं णत्थि।
सावज्जं ण हु मण्णइ ण गणइ गिह कप्पियं अट्ठं।।26।।
कच्छं खेत्तं वसहिं वाणिज्जं कारिदूण जीवंतो।
ण्हंतो सीयलणीरे पावं पउरं स संजेदि।।27।।

अर्थात् श्री पूज्यपाद स्वामी का शिष्य वज्रनन्दि द्राविड संघ का उत्पन्न करने वाला हुआ। यह प्राभृत ग्रंथों का ज्ञाता और महान पराक्रमी था। मुनिराजों ने उसे अप्रासुक या सचित्त चनों के खाने से रोका, पर उसने न माना और बिगड़कर विपरीत रूप प्रायश्चित आदि शास्त्रों की रचना की। उसके विचारानुसार बीजों में जीव नहीं है। मुनियों को खड़े-खड़े भोजन करने की विधि नहीं है। कोई वस्तु प्रासुक नहीं है। वह सावद्य भी नहीं मानता

और गृहकल्पित अर्थ को नहीं गिनता। कछार, खेत, वसतिका और वाणिज्य आदि कराके जीवन निर्वाह करते हुए, शीतल जल में स्नान करते हुए उसने प्रचुर पाप का संग्रह किया।

3. **यापनीय संघ –** आचार्य देवसेन ने दर्शनसार में कहा है।

कल्लाणे वरणयो सत्तसए पंच उत्तरे जादे।
जावणियसंघभावो सिरिकलसादो हु सेवडदो।।29।।

अर्थात् कल्याण नाम के नगर में विक्रम मृत्यु के 705 वर्ष बीतने पर श्री कलश नाम श्वेताम्बर साधु से यापनीय संघ का सद्भाव हुआ।

श्रुतसागर सुरि ने दर्शन पाहुड गाथा-11 की टीका में कहा है – **'यापनीयास्तु बेसरा गर्दभा इवोभयं मन्यन्ते, रत्नत्रय पूजयन्ति, कल्पं च वाचयन्ति, स्त्रीणां तदभवे मोक्षम्, केवलिजिनानां कवलाहारम्, परशासने सग्रन्थानां मोक्षं च कथयन्ति।'**

अर्थात् यापनीय खच्चरों के समान दोनों (दिग. + श्वे.) को मानते हैं। वे रत्नत्रय की पूजा करते हैं, कल्प का वाचन करते हैं, स्त्रियों को उसी भव से मोक्ष होता है, केवली भगवान कवलाहार करते हैं तथा अन्य मत में परिग्रही मनुष्यों को मोक्ष होता है, ऐसा कहते हैं।

4. **काष्ठा संघ (गोपुच्छ) –** आचार्य देवसेन ने दर्शनसार में कहा है–

सत्तसए तेवण्णे विक्कमरायस्स मरणपत्तस्स।
णंदियडे वरगामे कट्ठो संघो मुणेयव्वो।।38।।

विक्रम राजा की मृत्यु के 753 वर्ष बाद नन्दीतट ग्राम में काष्ठा संघ हुआ।

आसी कुमार सेणो णंदियडे विणयसेणदिक्खियओ।
सण्णासमंजणेण य अगहिय पुण दिक्खओजादो।।33।।

सो समणसंघ वज्जो कुमारसेणो हु समयमिच्छत्तो।
चत्तोवसमो रुद्धो कट्ठं संघं परूवेदि।।37।।

नंदीतट ग्राम में विनयसेन मुनि के द्वारा दीक्षित हुआ कुमारसेन नाम का मुनि था, उसने सन्यास से भ्रष्ट होकर फिर से दीक्षा नहीं ली। और उस मुनि संघ से बहिष्कृत, समय मिथ्यादृष्टि, उपशम को छोड़ देने वाले और रौद्र परिणाम वाले कुमारसेन ने काष्ठा संघ का प्ररूपण किया।

परिवज्जिऊण पिच्छं चमरं घित्तूण मोहकलिएण।
उम्मग्गं संकलियं वागडविसएसु सव्वेसु।।34।।

इत्थीणं पुण दिक्खा खुल्लय लोयस्स वीर चरियत्तं।
कक्कस-केसग्गहणं छट्ठं च गुणव्वदं नाम।।35।।

आयमसत्थपुराणं पायच्छित्तं च अण्णहा किं पि।
विरइत्ता मिच्छत्तं पवट्टियं मूढलोएसु।।36।।

उसने मयूरपिच्छि को त्यागकर चमरी गाय के बालों की पिच्छी ग्रहण करके सारे बागड़ प्रान्त में उन्मार्ग का प्रचार किया। स्त्रियों को दीक्षा देने का, क्षुल्लकों को वीरचर्या का, मुनियों को कड़े बालों की पिच्छी रखने का और रात्रि भोजन नामक छठे गुणव्रत का विधान किया। इसके सिवाय उसने अपने, आगम, शास्त्र, पुराण और प्रायश्चित ग्रन्थों को कुछ और ही प्रकार से रचकर मूर्ख लोगों में मिथ्यात्व का प्रचार किया।

5. **निष्पिच्छ संघ (माथुर संघ) –** आचार्य देवसेन ने दर्शनसार में कहा है–

तत्तो दुसएतीदे महुराए माहुराण गुरुणाहो।
णामेण रामसेणो णिप्पिच्छं वण्णियं तेण।।40।।

काष्ठासंघ के दो सौ वर्ष बाद विक्रम की मृत्यु के 953 वर्ष बाद मथुरा नगरी में माथुर संघ का प्रधान गुरु रामसेन हुआ। उसने नि:पिच्छक रहने का उपदेश दिया। उसने पीछी का सर्वथा ही निषेध कर दिया।

सम्मत्तपयडिमिच्छंतं कहियं जं जिणिंदबिंबेसु।
अप्पपरणिट्ठिएसु य ममत्तबुद्धीए परिवसणं।।41।।

एसो मम होउ गुरु अवरो णत्थित्ति चित्तपरियरणं।
सग गुरुकुलाहिमाणो इयरेसु वि मंगकरणं च।।42।।

उसने अपने और पराये प्रतिष्ठित किये हुये जिनबिम्बों की बुद्धि द्वारा न्यूनाधिक भाव से पूजा-वन्दना करने, मेरा गुरु यह है दूसरा नहीं, इस प्रकार के भाव रखने, अपने गुरुकुल (संघ) का अभिमान करने और दूसरे गुरुकुलों (संघों) का मान भंग करने रूप सम्यक्त्व प्रकृति मिथ्यात्व का उपदेश दिया।

अहो! स्वतन्त्र चिंतन को मान्यता देने से ये संघ जैनाभासी कहलाये।

वर्तमान में तेरह पंथ, बीस पंथ, शुद्ध तेरह पंथ, तारण पंथ, साढ़े सोलह पंथ आदि संज्ञाएँ जो जिनागम बाह्य स्वतंत्र चिंतन की उपज हैं एवं समाज को, श्रमण-श्रावक को आपस में बाँट रहीं हैं, रागद्वेष करा रहीं हैं, वास्तव में कितनी घातक हैं, स्वयं चिंतन करें।

हम सब क्यों न '**आगम चक्खु साहु**' अर्थात् साधु की आँख जिनागम है, इस प्रवचन को सार्थक करते हुए जिनागम पंथी बनें।।

'जयदु जिणागम पंथो'
जिनागम पंथ जयवंत हो।

याद

वतन की याद जिस दिल में कभी आती नहीं होगी।
वो मिट्टी का दिया होगा मगर बाती नहीं होगी।
मैं बच्चा था पिताजी लाये थे कोयल जो मिट्टी की।
समझ से कह दिया कोयल कभी गाती नहीं होगी।